

विवरणिका BROCHURE



हिन्द महासागर और अण्डमन चोला 1 Indian Ocean and Andaman Chola 1



भारतीय डाक विभाग
Department of Posts, India



तकनीकी आंकड़े TECHNICAL DATA

जारी करने की तारीख Date of Issue	: 20 मार्च, 2015 20 March, 2015
मूल्यवर्ग Denomination	: 500 पैसा 500 p
मुद्रित डाक-टिकटें Stamps Printed	: 6.0 लाख 0.6 Million
मुद्रण प्रक्रिया Printing Process	: वेट ऑफसेट Wet Offset
मुद्रक Printer	: प्रतिभूति मुद्रणालय, हैदराबाद Security Printing Press, Hyderabad

© डाक विभाग, भारत सरकार। डाक-टिकट, प्रथम दिवस आवरण तथा सूचना विवरणिका के संबंध में सर्वाधिकार विभाग के पास हैं।

© Department of Posts, Government of India. All rights with respect to the stamp, first day cover and information brochure rest with the Department.

मूल्य ₹ 5.00

Indian Ocean and Rajendra Chola I

The Indian Ocean is the third largest of the world's oceanic divisions, covering approximately 20 per cent of the water on the Earth's surface. It has Asia on the North, Africa on the West, Australia on the East and Antarctica on the South.

This vast Ocean connecting and separating nations has played an important role in shaping many countries' cultures and ideologies through the movement of goods, people, ideas and religion via trade, naval power, travel and scientific exploration across the sea. The world's earliest civilizations in Mesopotamia, ancient Egypt, and the Indian subcontinent developed around Indian Ocean. During the 1st and 2nd centuries C.E. intensive trade relations developed between Roman, Egyptian and the Tamil Kingdoms in southern India. In 1497 Portuguese navigator Vasco Da Gama was the first European to sail to India. European ships dominated trade which was reinforced in 1869 after the opening of Suez Canal. In 1971 the UN General Assembly declared Indian Ocean a zone of peace by resolution 2832.

The span of the Ocean is 6,200 miles (10,000 kilometers) from the southern tip of Africa to the western coast of Australia. In the southwest it joins the Atlantic Ocean and to the east it joins the Pacific Ocean.

Being the warmest Ocean in the world, the Indian Ocean accounts for 50 per cent of the world's container traffic and the ports of Indian Ocean Rim (IOR) region handle about 30 per cent of global trade. Around 66 per cent of the world's seaborne trade in oil transits the Indian Ocean. Roughly 55 per cent of known oil reserves, and around 40 per cent of gas reserves, are in the Indian Ocean region. Study of the Spice route, Cotton route, Perfume route etc. indicates what a vital role had been played by Indian Ocean for centuries in the history of Maritime trade. Today Indian Ocean is very much a part of global economy and is considered truly a Ratnakara - "the mine of gems" as mentioned in old treaties.

The rise of Chola Dynasty in the Peninsular India

unfolded a new chapter in the annals of the country when for the first time any ruling dynasty endeavored to conquer high seas and to expand its hegemony and dominance across the seas through development of a strong naval force. The Coronation of Rajendra Chola I in 1014 C.E. was an epoch making event in the history of the Indian subcontinent, and an important and bright chapter in the glorious history of Indian Ocean. Son of the great Rajaraja Chola I, King Rajendra is credited with expanding the Chola Empire across the seas to South-East Asia and to the North up to the Ganges, with his navy, earning him the sobriquet 'Gangai Kondan'.

Cross cultural linkages between India and the erstwhile empires and contemporary nations of the South east Asia and Far East can be traced back to the vast Chola Empire which was at the pinnacle of its glory during the reign of Emperor Rajendra Chola I, whose writ and supreme dominance extended beyond India to empires which accepted his suzerainty consequent to his successful and heroic naval exploits.

Apart from the military and territorial conquests which expanded the zone of influence and hegemony of the Cholas, the reign of the great Rajendra Chola I also witnessed growth in the soft power of India as his naval expeditions laid a strong foundation for promotion of trade, commerce and cultural exchanges which brought fabulous economic prosperity on one hand and expansion of Indian culture and heritage across the Indian ocean to the land of South East Asia on the other.

Department of Posts is happy to issue a Commemorative Postage Stamp on Indian Ocean and Rajendra Chola I.

Credits:-

Text	: Based on the material provided by the proponent and internet.
Stamp/FDC	: Suresh Kumar
Cancellation	: Alka Sharma

हिन्द महासागर और राजेन्द्र चोल प्रथम

हिन्द महासागर, विश्व का तीसरा विशालतम महासागर है, जो पृथ्वी की सतह के लगभग 20 प्रतिशत जल क्षेत्र को कवर करता है। इसके उत्तर में एशिया, पश्चिम में अफ्रीका, पूर्व में आस्ट्रेलिया और दक्षिण में एंटांक्टिका है।

राष्ट्रों को जोड़ने और अलग करने वाले इस विशाल महासागर ने व्यापार, नौसैनिक बलों, यात्राओं और वैज्ञानिक खोजों के जरिए सामान को समुद्र पार लाने—ले जाने, लोगों के आने—जाने तथा विचारों और धर्म के प्रवाह का माध्यम बन विभिन्न देशों की संस्कृति व विचारधाराओं के विकास में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है। मेसोपोटामिया, प्राचीन मिस्र और भारतीय उपमहाद्वीप की विश्व की प्राचीनतम सभ्यताएं हिन्द महासागर के आस-पास ही विकसित हुईं। पहली व दूसरी शताब्दी के दौरान, रोमन, मिस्र तथा दक्षिण भारत की तमिल राजशाहियों के बीच घनिष्ठ व्यापारिक संबंध स्थापित हुए। 1497 में पुर्तगाली समुद्री यात्री वास्को डी गामा, भारत के तट पर कदम रखने वाले प्रथम यूरोपीय नागरिक थे। 1869 में स्वेज नहर के खुलने के बाद व्यापार का सिलसिला और अधिक सुदृढ़ हुआ और व्यापार जगत पर यूरोपीय जहाजों का प्रभुत्व रहा। 1971 में संकल्प 2832 पारित कर संयुक्त राष्ट्र महासभा ने हिन्द महासागर को शांति क्षेत्र घोषित किया।

अफ्रीका के दक्षिणी छोर से लेकर आस्ट्रेलिया के पश्चिमी तट तक फैले इस महासागर का विस्तार क्षेत्र 6,200 मील (10,000 कि. मी.) का है। दक्षिण-पश्चिम में यह एटलांटिक महासागर से मिलता है, तो पूर्व में प्रशांत महासागर का हाथ धामता है।

हिन्द महासागर, विश्व का सबसे उष्ण महासागर है, जिस कारण विश्व का 50 प्रतिशत मालवाहक यातायात इसी के रास्ते होता है और कुल वैश्विक व्यापार में से 30 प्रतिशत व्यापार हिन्द महासागर रिम क्षेत्र के बंदरगाहों पर ही होता है। तेल के क्षेत्र में विश्व का 66 प्रतिशत सामुद्रिक व्यापार हिन्द महासागर के रास्ते ही संभव होता है। अब तब के ज्ञात लगभग 55 प्रतिशत तेल भंडार और 40 प्रतिशत गैस भंडार, हिन्द महासागर क्षेत्र में ही मौजूद हैं। स्पाइस रूट (मसाला व्यापार मार्ग), कॉटन रूट (कपास व्यापार मार्ग), परप्यूम रूट (इत्र व्यापार मार्ग) आदि के अध्ययन से यह बात स्पष्ट हो जाती है कि समुद्री व्यापार के इतिहास में हिन्द महासागर ने सदियों तक कितनी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। आज, हिन्द महासागर, वैश्विक अर्थव्यवस्था का अभिन्न अंग है और सही मायनों में इसे रत्नाकर अर्थात् 'मणियों की खान' माना जाता है, जिसका उल्लेख प्राचीन अभिलेखों में भी है।

प्रायद्वीपीय भारत में चोल राजवंश के उदय ने देश के इतिहास में एक नया अध्याय जोड़ा जब किसी शासक ने अपने आधिपत्य का विस्तार करने के लिए समुद्री लहरों पर विजय प्राप्त करने का इरादा किया और एक सशक्त नौसैनिक बल खड़ा कर समुद्र पार के क्षेत्रों में अपना प्रभुत्व स्थापित करने की ठानी। 1014 ई. में राजेन्द्र चोल प्रथम का राज्याभिषेक, भारतीय उपमहाद्वीप के इतिहास का युगान्तरकारी और हिन्द महासागर के गौरवशाली इतिहास का महत्वपूर्ण एवं शानदार अध्याय सिद्ध हुआ। महान राजराज चोल प्रथम के सुपुत्र, सम्राट राजेन्द्र को अपनी नौसेना के बल पर चोल सम्राज्य का विस्तार कर इसकी सरहदों को समुद्र पार दक्षिण पूर्व एशिया तक तथा उत्तर में गंगा तक फैलाने का श्रेय प्राप्त है, जिसके लिए उन्हें 'गंगई कॉडन' के नाम से भी जाना जाता है।

भारत और दक्षिण-पूर्व एशिया तथा सुदूर पूर्व के मूलपूर्व सम्राज्यों और समकालीन देशों के बीच सांस्कृतिक संबंधों का इतिहास विशाल चोल सम्राज्य के दौरान प्रारंभ हुआ, जो सम्राट राजेन्द्र चोल प्रथम के शासनकाल में अपने गौरव के शिखर पर था, जिनके आदेशों और सर्वव्यापी प्रभुत्व का विस्तार भारत की सरहदों से आगे उन सम्राज्यों तक भी था, जिन्होंने उनके पराक्रमी नौसैनिक विजयक्रमों के कारण उनके आधिपत्य को स्वीकार कर लिया था।

सैन्य मोर्चा पर मिली विजय और नए क्षेत्रों पर नियंत्रण के परिणामस्वरूप, चोल सम्राज्य के प्रभाव-क्षेत्र के विस्तार और आधिपत्य में वृद्धि के साथ-साथ महान राजेन्द्र चोल प्रथम के शासनकाल में भारत की सैन्य शक्ति भी बढ़ी। सम्राट राजेन्द्र की नौसैनिक यात्राओं ने व्यापार, वाणिज्य और सांस्कृतिक संबंधों की मजबूत नींव रखी, जिसके परिणामस्वरूप एक ओर शानदार आर्थिक प्रगति हुई और दूसरी ओर, भारतीय संस्कृति और समृद्ध विरासत का हिन्द महासागर के पार दक्षिण-पूर्व एशिया के देशों तक विस्तार हुआ।

डाक विभाग, हिन्द महासागर और राजेन्द्र चोल प्रथम पर एक स्मारक डाक-टिकट जारी करते हुए प्रसन्नता का अनुभव करता है।

आभार :-

मूलपाठ	: प्रस्तावक द्वारा उपलब्ध कराई गई तथा इंटरनेट से प्राप्त सामग्री पर आधारित
डाक-टिकट/प्रथम दिवस	: सुरेश कुमार
आवरण	
विरूपण	: अलका शर्मा